काटा रामूडू

बनाम

आंध्र प्रदेश राज्य

मार्च 3,1997

[के. रामास्वामी और जी. टी. नानावती, न्यायमूर्तिगण]

दंड संहिता, 1860:

धारा 302-हत्या के आरोपी की छाती पर चाकू से वार आरोपी ने पीड़ित के सीने पर चाक़ू से वार किया जिससे पीड़ित के ह्रदय का निलय आर - पार कट गया-पीड़ित की तुरंत मृत्यु हो गई-इस आशय का मौखिक साक्ष्य कि आरोपी ने पीड़ित को चोट पहुंचने से पहले पीड़ित को ख़त्म करने की बात कही थी-माना जाता है, इन परिस्थितियों में अपराध स्पष्ट रूप से हत्या का है-उच्च न्यायालय ने आरोपी की दोषसिद्धि और निचली अदालत द्वारा पारित आजीवन कारावास की सजा की पुष्टि करने में कोई त्रुटि नहीं की।

आपराधिक अपील न्यायनिर्णयः आपराधिक अपील सं. 247/1997

क्रिमिनल अपील संख्या 32/1995- में आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा दिनांकित 18.10.1995 की पारित आदेश एवम निर्णय के विरुद्ध

अपीलार्थी के लिए सुश्री के. शारदा देवी (एससीएलएससी)।

प्रत्यर्थी के लिए जी. प्रभाकर।

न्यायालय का निम्नलिखित आदेश दिया गया थाः

अपील स्वीकृत की गई।

विशेष अनुमति द्वारा यह आंध्र प्रदेश उच्च न्यायलय की खंडपीठ द्वारा आपराधिक अपील सं. 32/95 में पारित दिनांक 18.10.1995 के निर्णय और आदेश से उत्पन्न होती है।

अभियोजन पक्ष के अनुसार, अपीलार्थी-अभियुक्त, अभियुक्त संख्या 2 का चाचा है। वे आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के वेलेटुरू गांव के निवासी थे। एक वी. नागेश्वर राव उर्फ नागुरू, (जिसे इसके बाद "मृतक" कहा जाता है), खम्मम जिले के सत्तुपल्ली का निवासी था। पीडब्लू-9 मृतक की विधवा है। पीडब्लू-1 खम्मम जिले के वीरमल्लू गाँव का मूल निवासी है। यह अभियोजन का मामला है कि वे सभी हैं जाति 'येरुकला' से संबंध है। मृतक और पीडब्लू-6 चोरी करते थे और वे पूर्व-दोषी थे। अभियुक्त सं. 1 मृतक के साथ अपराध भी करता था। जबकि 1991 के अपराध सं. 110 में धारा 395 के तहत अपराध में जांच चल रहा था, पीडब्लू-16, पुलिस उप-निरीक्षक ने मृतक और दो कांस्टेबलों के माध्यम से पीडब्लू-1 भेजा था। 17 जनवरी, 1992 को सुबह लगभग 11 बजे वे भीमवरप्पाडु गाँव पहुँचे। और जंक्शन के एक होटल में गया। जहाँ पीडब्लू। 6 और 10 रुक गए, मृतक पीडब्लू-1 के घर चला गया। मृतक ने पीडब्लू-1 को सूचित किया कि उसे पुलिस उपनिरीक्षक ने बुलाया था। पीडब्लू-1 ने तब उसे बताया कि पैर में दर्द होने के कारण वह चल नहीं पा रहे थे। वे जंक्शन स्थित कॉफी होटल की ओर बढ़े। अभियोजन पक्ष का कथन है कि जब पीडब्लू-1, मृतक और पीडब्लू-3, जो रास्ते में उनके साथ शामिल हुए, भीमवरप्पाडु जंक्शन पहुंचे, तो अपीलार्थी और अभियुक्त-2 पीछे से दो साइकिलों पर आए और मृतक को पकड़ लिया। अभियोजन पक्ष का यह आगे कथन है कि अभियुक्त-1 मृतक के पास आया और मृतक के गले में एक तौलिया डाल दिया और उसे खींच लिया। कहा जाता है कि अपीलार्थी द्वारा यह भी कहा गया था कि मृतक को उस तारीख को मौत के घाट उतार दिया जाना चाहिए। इसके बाद अभियुक्त-2 ने मृतक के हाथों को पीछे की ओर घुमाकर उसे पकड़ लिया। इसके बाद, अभियुक्त-1, अपीलार्थी ने अपनी कमर से एक चाकू निकाला और मृतक को चाकू मार दिया। शव परीक्षण करने वाले डॉक्टर पीडब्लू-15 के साक्ष्य के अनुसार मृतक को तीन चोटें

आई थीं जिनमें से एक चोट थी। नंबर 3 "2-1/2" x1 "की एक उभरी हुई तिरछी चोट है जो छाती की दीवार के माध्यम से प्रवेश करती है और निचली ओर झुकती है और कटी हुई मांसपेशियों और कटी हुई पसलियों को उजागर करती है। मध्य से बाएं निप्पल तक। जमा हुआ खून मौजूद है। धारदार हथियार। आंतरिक चोटः छाती की दीवार पर त्वचा को खोलने पर 7वीं और 8वीं पसलियों को पूरी तरह से कटी हुई और 6वीं पसलियों को आंशिक रूप से बाहरी चोट संख्या 3 के अनुरूप उरोस्थि के बगल से बाएं किनारे तक काटा हुआ पाया जाता है। छाती की दीवार को खोलने पर, दाहिने शीर्ष पर 1-1/2 इंच की तिरछी चोट होती है। पेरिकार्डियम टूटा हुआ पाया जाता है। आसपास के ऊतकों में रक्त का बहिर्वेशन उल्लिखित सभी चोटों के संबंध में। सभी चोटें *प्री-मॉर्टम* हैं।

पीडब्लू-15 के साक्ष्य के अनुसार, हृदय को चोट एक नुकीली वस्तु से लगी थी और हृदय में चोट मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त थी। जो आई. पी. सी. की धारा 300 के खंड 3 के तहत आता है। इसलिए सवाल यह हैः क्या अपराध हत्या का है या गैर इरादतन हत्या? सुश्री के. शारदा देवी अपीलार्थी की ओर से पेश विद्वान वकील का तर्क है कि अपीलार्थी को पता नहीं था कि मृतक वहाँ पुलिस के मुखबिर के तौर पर वहाँ आ रहा होगा या नहीं मृतक के कई दुश्मन थे और वे उसकी तलाश में थे। नतीजतन, यह पता नहीं था कि वह मृतक से मिलेगा और परिणामस्वरूप, उसका मृतक को मारने का कोई इरादा नहीं था। हम विद्वान वकील के तर्क की सराहना नहीं कर सकते। प्रश्न केवल किये गए अपराध की प्रवृति तक सीमित है? और इसलिए, हमें साक्ष्य के आधार पर आगे बढ़ना होगा। अभिलेख पर जैसा कि नीचे की अदालतों द्वारा स्वीकार किया गया है और फिर इस बात पर विचार करने के लिए कि क्या तथ्य आई पी सी की धारा 302 के तहत दंडनीय हत्या के अपराध को सामने लाते हैं।

वनाच्छादित तथ्यों के आलोक में और चोट की प्रकृति को देखते हुए मृतक पर लगाया गया, यह स्वयंसिद्ध है कि जब अपीलार्थी ने दिल में तेज धार वाले हथियार को छेदकर चोट पहुंचाई थी जिसके परिणामस्वरूप मृतक की तुरंत मृत्यु हो गई, से अनुमान यह होगा कि उसने ऐसा मृतक की जान मरने के इरादे से चोट पहुंचाई थी। पीडब्लू-15 डाक्टर, के साक्ष्य के आलोक में, डॉक्टर के साक्ष्य और अभियोजन गवाहों द्वारा बोले गए सामग्री अभियोजन साक्ष्य और "मृतक को समाप्त करने" के शब्द, जैसा कि घटना करीत करने के समय कहा गया था। अपराध, अपराध स्पष्ट रूप से हत्या में से एक है। तदनुसार, हम नहीं पाते है कि उच्च न्यायालय ने आई.पी.सी धारा 302 के तहत हत्या के अपराध के लिए अपीलार्थी की दोषसिद्धि की पुष्टि करने में कोई त्रुटि की है और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

तदनुसार अपील खारिज कर दी जाती है।

आर.पी. याचिका खारिज कर दी गई।

राकेश सिन्हा